विभिन्न बल, योगबल

और

परमात्मा

आत्म-बल V/S पवित्रता का बल V/S योगबल V/S परमात्म-बल

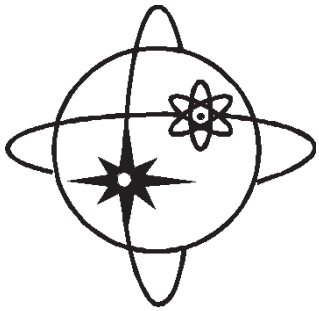

अटल सत्य

सतयुग में आत्मा सतोप्रधान स्थिति में सतोप्रधान प्रकृति के सतोप्रधान सुख भोगती है, उससे भी आत्मिक शक्ति और आत्मा का संगम पर जमा किया हुआ पुण्य का खाता घटता है, फिर द्वापर से जब आत्मा देहाभिमान के वश रजो-तमो स्थिति में आती है तो रजो-तमो प्रकृति का रजो-तमो सुख भोगती है और विषय-सुख में प्रवृत्त होती है तो आत्मिक शक्ति और जमा का खाता तीव्रता से घटता है। फिर जब आत्मा विकारों के वशीभूत प्रकृति के साधन-सम्पत्ति का दुरुपयोग करता है या अनावश्यक और अनाधिकृत रूप से उपभोग करता है, विकारों के वशीभूत आत्माओं से साथ दुर्व्यवहार करता है तो आत्मा पर पाप का बोझ चढ़ता है, जो आत्मा को दुखी-अशान्त बना देता है।

फिर जब कल्प के पुरुषोत्तम संगमयुग पर आत्मा को परमपिता परमात्मा से यथार्थ ज्ञान मिलता है और आत्मा परमात्मा के साथ योगयुक्त होकर संगमयुगी ईश्वरीय प्राप्तियों और अनुभूतियों में रमण करते हुए अतीन्द्रिय सुख अर्थात् परमानन्द के अनुभव में रहती है तो पापों का बोझ कम होता जाता है और उस स्थिति में आत्मा जो ईश्वरीय सेवा करती है, उससे पुण्य का खाता जमा होता जाता है, जिससे आत्मा सम्पन्नता और सम्पूर्णता को प्राप्त करती है। अतीन्द्रिय सुख अर्थात् परमानन्द के अनुभव की स्थिति में आत्मा से जो वृत्ति और वायब्रेशन पैदा होता है, उससे जड़-जंगम-चेतन प्रकृति पावन बनकर अपने सतोप्रधान सम्पन्न स्वरूप को प्राप्त करती है, जिससे आत्मा का पुण्य का खाता जमा होता है, जिसके आधार पर ही सतयुग-त्रेता में आत्मा को जड़-जंगम-चेतन प्रकृति से सुख प्राप्त होता है।

अभी हमारा परम कर्तव्य है कि हम प्रकृति प्रदत्त साधन-सम्पत्ति का कम से कम उपभोग करें अर्थात् उतना ही उपभोग करें, जिससे हमारी उपयोगिता या कार्य-क्षमता बढ़ती रहे अथवा स्थिर रहे और संगम पर परमात्मा से प्राप्त साधनों अर्थात् ज्ञान-गुण-शक्तियों और अनुभूतियों के द्वारा परम-शक्ति, परम-शान्ति, परमानन्द अनुभव करते रहें और सर्वात्माओं को कराते रहें।

परम गौरवमय

''अनादि स्वरूप में परमधाम में बाप के साथ-साथ चमकती हुई आत्मा हैं। बाप के साथ के कारण विशेष चमकती हुई दिखाई दे रही हैं।... सृष्टि-चक्र के आदि अर्थात् सतयुग आदि में अपना स्वरूप देखो, कितना श्रेष्ठ सुख स्वरूप है, कितना सर्व प्राप्ति स्वरूप है।... फिर नीचे आओ तो द्वापर में भी आपका स्वमान पूज्य का है अर्थात् पूज्य स्वरूप है।... सभी कितनी भावना से कायदे प्रमाण पूजा करते हैं। ऐसे कायदे प्रमाण पूजा और किसी की भी नहीं होती है।... संगम पर स्वयं भगवान आपकी जीवन में पवित्रता की विशेषता भरता है, जो पवित्रता आपके सर्व अविनाशी सुखों की खान है। (फिर रिटर्न जर्नी अर्थात् फरिश्ता स्वरूप)''

अ.बापदादा 2.02.12

वर्तमान पुरुषोत्तम संगमयुगी जीवन परम गौरवमय (Graceful) है। अभी बाबा ने हमको हमारे तीनों कालों और तीनों लोकों के गौरवमय स्वरूपों की स्मृति दिलाई है। उन तीनों लोकों और तीनों कालों की यथार्थ अनुभूति अभी ही आत्मा को होती है और उन तीनों लोकों और तीनों कालों की गौरवमय स्थिति का आधार अभी संगमयुग के गौरवमय कर्तव्य ही हैं। जो आत्मा उन गौरवमय कर्तव्यों में तन-मन-धन, मन्सा-वाचा-कर्मणा तत्पर रहती है, उसको उन गौरवमय स्थितियों का अनुभव अवश्य होता है।

प्रस्तावना

विश्व में अनेक प्रकार के बल हैं, जिनके आधार पर यह विश्व-नाटक 5000 वर्ष तक सफलतापूर्वक चलता है और कल्पान्त में परमात्मा आकर योग सिखाते हैं, जो आत्मायें उस योग को सीखकर परमात्मा के साथ योगयुक्त होते हैं, उनमें योगबल आता है, जिस योगबल से विश्व का नव-निर्माण होता है और वे आत्मायें ही नये विश्व अर्थात् सतयुग-त्रेता के दैवी सुखों के अधिकारी बनते हैं। हमारा ये जीवन परम भाग्यशाली है कि हम परमात्मा के साथ योगयुक्त होकर अपने योगबल से विश्व के नव-निर्माण में सहयोगी बनें हैं। विश्व-नाटक के यथार्थ ज्ञान को समझकर अपने इस परम भाग्य को देखकर सदा हर्षित रहना और अन्य आत्माओं को भी उसका रास्ता बताना ही हमारा परम कर्तव्य है।

विभिन्न बल, योगबल और परमात्मा

आत्म-बल V/S पवित्रता का बल V/S योगबल V/S परमात्म-बल

विषय-सूची पेज नम्बर

विभिन्न बल और विश्व-परिवर्तन की प्रक्रिया 1

आत्म-बल, पवित्रता का बल, योगबल, बाहुबल, भोगबल, विज्ञान बल और परिवर्तन की प्रक्रिया

विभिन्न बल, विश्व-परिवर्तन की प्रक्रिया और परमात्मा... ... 1

Q. आवाज़ से परे शान्त स्वरूप की स्थिति क्या है? कई सन्यासी मौन व्रत धारण करते तो उसको शान्त स्वरूप कहेंगे? यदि कहेंगे तो क्यों और नहीं कहेंगे तो क्या कहेंगे?

Q. पवित्रता का बल, आत्म-बल, संकल्प-शक्ति, योगबल चारो में क्या अन्तर है और चारो का परस्पर क्या सम्बन्ध है? 1

Q. सन्यासियों के योग और परमात्मा जो योग सिखाते, उसमें क्या अन्तर है तथा पवित्रता के बल और योगबल में क्या अन्तर है?

Q. क्या देवताओं में योगबल होता है? यदि होता है तो उसका प्रमाण क्या है और यदि नहीं होता है तो उनमें कौनसा बल होता है? 1

Q. योग और योगबल क्या है? क्या योग से आत्मा को परमात्मा से बल मिलता है? यदि बल मिलता है तो कैसे और यदि नहीं मिलता है तो क्या होता है?

Q. योगबल का यथार्थ प्रयोग किसको कहेंगे?

Q. ब्राह्मणों की पवित्रता, देवताओं की पवित्रता और सन्यासियों आदि की पवित्रता में क्या अन्तर है? 1

Q. आपघात अर्थात् जीवघात क्या है, उसका कारण क्या है और कितने प्रकार से जीवघात करते हैं और उसका फल क्या होता है?

''उनका योग सर्वशक्तिमान बाप से नहीं है तो विकर्म विनाश हो नहीं सकते। ब्रह्म वा तत्व को सर्वशक्तिमान थोड़ेही कहेंगे। सर्वशक्तिमान तो एक परमपिता परमात्मा शिव ही है। ... बाप योगबल से विश्व का मालिक बनाते हैं, बल मिलता है सर्वशक्तिमान बाप से। बाप है वर्ल्ड ऑलमाइटी अथॉरिटी।''

सा.बाबा 16.04.13 रिवा.

''बुद्धि से समझा जाता है कि यह नॉलेज ज्ञान सागर शिवबाबा के सिवाए कोई दे नहीं सकता है। ... कई बच्चियाँ बिगर देखे भी शिवबाबा से मिलने के लिए तड़पती हैं तो जरूर उनकी ताक़त है, जो खींचती है, मिलने की कशिश होती है। ... तुम्हारा काम है नॉलेज से। यह नॉलेज कोई दे न सके। यह बाबा भी कहते हैं यह नॉलेज शिवबाबा ही देते हैं, हम थोड़ेही देते हैं।''

सा.बाबा 22.06.13 रिवा.

यह सृष्टि-चक्र एक अनादि-अविनाशी नाटक है, जो सतत् गतिशील है। इसमें आत्म-बल, परमात्म-बल, पवित्रता का बल, ज्ञान-बल, प्रकृति का बल, विज्ञान-बल आदि-आदि अनेक प्रकार के बल है, जो इसके सफल संचालन में अपनी भूमिका निभाते हैं, जिनका ज्ञान परमात्मा आकर देते हैं। परमात्मा सर्वशक्तिवान है, ज्ञान का सागर है, पतित-पावन है, नये विश्व का रचता है। उनमें कौनसा विशेष बल है, जिससे इस विश्व का परिवर्तन होता है, आध्यात्म-मार्ग के पुरुषार्थी को इस सत्य को समझना भी अति आवश्यक है। जब हम इस सत्य को समझेंगे, तब ही हम अपने आत्म-बल को जाग्रत कर सकेंगे और परमात्मा के साथ योगयुक्त होकर विश्व-परिवर्तन के कार्य में परमात्मा के सहयोगी बन सकेंगे।

विभिन्न बल और विश्व-परिवर्तन की प्रक्रिया

आत्म-बल, पवित्रता का बल, योगबल, बाहुबल, भोगबल, विज्ञान बल और परिवर्तन की प्रक्रिया

विभिन्न बलों का विश्व-परिवर्तन और आत्माओं के सुख-दुख में क्या भूमिका है, यह विचारणीय है। विश्व-परिवर्तन दो प्रकार का है - एक है तमोप्रधानता से सतोप्रधानता का, दूसरा है सतोप्रधानता से तमोप्रधानता का।

इस विश्व-नाटक में आत्म-बल, पवित्रता का बल, योगबल, विज्ञान-बल, प्रकृति का बल, बाहुबल, भोगबल, आदि-आदि अनेक प्रकार के बल है, जिनका विश्व-नाटक में अपना-अपना स्थान है। ज्ञान सागर बाप ने हमको सबका ज्ञान दिया है। इनमें कुछ बल तो सीधे विश्व के नव-निर्माण में सहयोगी हैं, जिसमें योगबल का विशेष स्थान है। कुछ विश्व-नाटक के संचालन और विश्व के नव-निर्माण दोनों में सहयोगी हैं, जिनमें आत्म-बल, पवित्रता का बल, विज्ञान-बल, प्रकृति का बल विशेष हैं। कुछ समयानुसार विश्व-नाटक के संचालन में सहयोगी होते हैं, जिनमें बाहुबल, भोगबल विशेष हैं। पुरानी दुनिया के विनाश में विज्ञान-बल और प्रकृति के बल की विशेष भूमिका है और नई दुनिया के निर्माण विज्ञान-बल, प्रकृति के बल के साथ योगबल का विशेष स्थान है।

इस विश्व में जड़-जंगम-चेतन प्रकृतियों में अनेक प्रकार के बल हैं, जिनके आधार पर यह विश्व-नाटक चलता है परन्तु वे सब बल होते भी उन प्रकृतियों की और समग्र विश्व की उतरती कला ही रही है अर्थात् विश्व सतोप्रधानता से तमोप्रधानता की ओर ही अग्रसर रहा है। अभी जब ज्ञान सागर, सर्वशक्तिवान परमपिता परमात्मा ने इस धरा पर आकर हमको विश्व-नाटक का यथार्थ ज्ञान दिया है और योग सिखाया है, तब उस योगबल से हमारी चढ़ती कला हुई है, हो रही है और हमारे इस योगबल से जड़-जंगम-चेतन सारी प्रकृतियों की चढ़ती कला होती है। अपने इस गौरवपूर्ण (Graceful) जीवन का महत्व समझते हुए ज्ञान सागर परमात्मा के दिये हुए विभिन्न ज्ञान-बिन्दुओं पर विचार करके इसके विधि-विधानों को समझकर इस विश्व-नाटक को देखते और पार्ट बजाते हुए सदा हर्षित रहना है और दूसरों को भी हर्षित रहने में सहयोगी बनना ही इस ब्राह्मण जीवन की सफलता है।

''तुम जानते हो हम विश्व को शान्त बनाकर, उस पर राज्य करेंगे। ऐसा बुद्धि में होगा तब नशा चढ़ेगा। तुम बच्चों को भारत को हेविन बनाना है। तुम जानते हो - हम बाप की श्रीमत से, अपने योगबल से अपनी राजधानी स्थापन कर रहे हैं। तो कितना नशा रहना चाहिए। यह है रुहानी

नशा। बच्चे समझते हैं - बाप हर कल्प इस रुहानी बल से हमको विश्व का मालिक बनाते हैं।''

सा.बाबा 17.06.68 रात्रि क्लास

''परमपिता परमात्मा आकर नई दुनिया स्थापन करते हैं। दुनिया में किसको भी यह पता नहीं है। गीता में आटे में नमक मिसल कुछ सत्य है।... भारत का योगबल नामीग्रामी है। हठयोगी कब राजयोग सिखला नहीं सकते। परन्तु आजकल झूठ बहुत है।... बाप कहते हैं - कल्प-कल्प ऐसे ही होता है। सब नास्तिक बन जाते हैं तो मैं आकर नास्तिक से आस्तिक बनाता हूँ।''

सा.बाबा 17.06.68 रात्रि क्लास

आत्म-बल

हर आत्मा में आत्म-बल होता है, जिसके आधार पर वह इस सृष्टि रंगमंच पर पार्ट बजाती है परन्तु पार्ट बजाने के साथ उस बल में तमोप्रधानता आती जाती है, जिससे आत्मा विकर्मों में प्रवृत्त होकर दुख पाती है। इस आत्म-बल को ही संकल्प-शक्ति भी कहा जाता है।

योगबल

कल्पान्त में जब परमात्मा इस धरा पर अवतरित होते हैं तो आत्माओं का उनके साथ सम्बन्ध होता है, आत्माओं को उनसे आत्मा, परमात्मा, सृष्टि-चक्र का ज्ञान मिलता है, जिससे आत्मायें अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर परमात्मा के सानिध्य से अपनी सुषुप्त शक्ति को जाग्रत करती हैं, तमोप्रधान से सतोप्रधान बनती हैं और अन्य आत्माओं और प्रकृति को भी सतोप्रधान बनाती हैं। योगबल के आधार पर ही आत्माओं और जड़-जंगम प्रकृति की चढ़ती कला होती है।

विज्ञान-बल

आत्म-बल के आधार पर ही आत्मा विज्ञान के क्षेत्र में विभिन्न अविष्कार करती है परन्तु जब आत्म-बल पवित्रता के बल से प्रभावित होता है तो विज्ञान-बल से सुख-शान्ति के साधनों का निर्माण करता है अर्थात् विज्ञान-बल सुख का आधार बनता है परन्तु जब आत्मा का पवित्रता का बल क्षीण हो जाता है तो आत्मा प्रकृति अर्थात् देहाभिमान के वशीभूत विकारों में प्रवृत्त होने के कारण विज्ञान बल से अनेक दुखदायी साधनों का निर्माण करता है अर्थात् दुख-अशान्ति का कारण बनता है और अन्ततः विश्व के विनाश का निमित्त बनता है।

''आवाज़ से परे अपने शान्त स्वरूप की स्थिति में सदा अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति होती है। इस अतीन्द्रिय सुखमय स्थिति द्वारा अनेक आत्माओं का सहज ही आवाह्न कर सकेंगे। यह पॉवरफुल स्थिति ही विश्व-कल्याणकारी स्थिति कही जाती है। जैसे साइन्स के साधनों से दूर की चीजें भी समीप दिखाई देती हैं। ... ऐसे ही साइलेन्स की स्टेज द्वारा कितना भी दूर रहने वाली आत्मा को सन्देश पहुँचा सकते हो। वे ऐसे अनुभव करेंगे जैसे साकार में सम्मुख किसी ने सन्देश दिया है।''

अ.बापदादा 7.01.77

''गीत में सुना कि हम इन्सान अन्धेरे में हैं, लेकिन आज तो दुनिया समझती है कि हम बहुत रोशनी में हैं। चान्द तक जा सकते हैं, आकाश, सितारों में घूम सकते हैं। ... इन सब बातों को देखकर मनुष्य समझते हैं कि बहुत रोशनी आ गई है। परन्तु गीत के अनुसार अन्धेरा किस बात का है? ... लाइफ में सुख-शान्ति के बजाये और ही दुख-अशान्ति बढ़ती जा रही है।''

मातेश्वरी 24.04.65

''लाइफ सुख-शान्ति से सम्पन्न होनी चाहिए, वह नहीं है। उसमें तो मनुष्य ऊंचा नहीं जा रहा है। लाइफ में सुख-शान्ति के बजाये और ही दुख-अशान्ति बढ़ती जा रही है। इससे सिद्ध होता है कि जो मनुष्य को चाहिए, उसमें नीचे होते जाते हैं, उसका अन्धकार बढ़ता जाता है। ... टेलीविज़न, रेडियो, आदि है परन्तु लाइफ में जो सुख-शान्ति हो, वह नहीं रही है। उसका अन्धकार है।''

मातेश्वरी 24.04.65

''वे योरोपवासी यादव भी जानते हैं - हमने यह जो मूसल आदि बनाये हैं, इनसे जरूर हम अपने कुल का विनाश करेंगे। महाभारी महाभारत लड़ाई भी मशहूर है। अभी सबका मौत सामने खड़ा है। ... सबको शरीर छोड़कर वापस घर जाना है। यह होलिका आदि सब यहाँ के उत्सव हैं। विनाश होना है, उसका ही यादगार यह होलिका है।''

सा.बाबा 13.06.13 रिवा.

जब विज्ञान बल अर्थात् साइन्स योगबल से प्रभावित होती है, तो वह विश्व नव-निर्माण का कार्य करती है, इसलिए विज्ञान वाली आत्मायें जब परमात्मा के सम्पर्क में आ जाती हैं तो वे अपनी विज्ञान की शक्ति को विश्व नव-निर्माण के कार्य में प्रयोग करती है, जिससे नये विश्व का स्थूल में निर्माण होता है। बिना योगबल के विज्ञान विनाश के ही निमित्त बनती है। विज्ञान के द्वारा अविष्कारित जो भी साधन हैं, वे विश्व में विभिन्न सुख-साधनों का निर्माण करते हैं, उनसे आत्माओं को सुख मिलता है परन्तु वे सब गिरती कला में ही जाते हैं अर्थात् तमोप्रधान बनते हैं और अन्ततः विनाश के कारण बनते हैं।

विभिन्न बल, विश्व-परिवर्तन की प्रक्रिया और परमात्मा

यह विश्व-नाटक आत्मा-परमात्मा और प्रकृति के सहयोग से चलता है। तीनों का अपना-अपना विशेष बल है, जो इसके संचालन में सहयोगी बनता है। प्रकृति अर्थात् 5 तत्वों का भी अपना बल है, जिसके आधार पर प्रकृति आत्माओं को उनके कर्मों अनुसार सुख-दुख की निमित्त बनती है अर्थात् प्रकृति का बल आत्मा के कर्मों अनुसार सुख-दुख का निर्णय करता है। सारे कल्प प्रकृति आत्मा को उनके कर्मों का फल देने के निमित्त बनती है। कल्पान्त में आत्म-बल, परमात्मा-बल के सहयोग से आत्मा प्रकृतिजीत बनती है और योगबल से प्रकृति को भी पावन बनाती है। इस सत्य की वास्तविकता पर विचार करें तो आत्मा के आत्माओं के साथ के हिसाब-किताब के समान प्रकृति के साथ भी हिसाब-किताब बनते हैं और कल्पान्त में वह पूरा होता है। क्योंकि आत्माओं ने प्रकृति को प्रदूषित किया है और उसको ही प्रकृति को पावन सतोप्रधान बनाना पड़ता है। इस जड़ प्रकृति के हर तत्व में अपनी आकर्षण शक्ति (Gravity Power) है, जिससे कल्पान्त में सभी तत्व अपने समकक्ष तत्वों को आकर्षित करते हैं, जिससे वे संग्रहीत होकर खानियों के रूप में स्थित होकर केन्द्रित हो जाते हैं, जो अभी विकेन्द्रित हो गये हैं।

''अभी बाप ने हमको सारे वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी का ज्ञान दिया है। अभी तुम जानते हो हम आत्मायें घर में नंगी रहती हैं। आत्मा अशरीरी है, यहाँ आकर पार्ट बजाने के लिए शरीर धारण करती है। बाप तो सदैव अशरीरी है।... आत्मा अविनाशी है, हर एक आत्मा को अविनाशी पार्ट मिला हुआ है। तुम जानते हो परमात्मा का पार्ट सबसे न्यारा है। परमात्मा ही आकर इस ड्रामा के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान देते हैं और पतित से पावन बनाते हैं।''

सा.बाबा 13.06.13 रिवा.

साइलेन्स का बल, साइन्स का बल, पवित्रता का बल, आदि-आदि बल तो सारे कल्प में आत्माओं में होते हैं परन्तु योगबल पुरुषोत्तम संगमयुग पर ब्राह्मणों में ही होता है, जब ज्ञान सागर परमात्मा इस धरा पर आते हैं और आकर आत्मा, परमात्मा, सृष्टि-चक्र का ज्ञान देते हैं और यथार्थ योग सिखलाते हैं। जब ये

साइलेन्स का बल, साइन्स का बल, पवित्रता का बल योगबल से प्रभावित होता है तब ही विश्व की जड़-जंगम-चेतन तीनों प्रकृतियों की चढ़ती कला होती है अर्थात् सब सतोप्रधान बनते हैं। योगबल के न होने से सारे कल्प अन्य सभी बल उतरती कला में होते हैं अर्थात् उनकी शक्ति क्षीण होती जाती है।

पवित्रता का बल दो प्रकार का है। एक है देवताओं की पवित्रता का बल, दूसरा है अन्य सभी आत्माओं का पवित्रता का बल। देवतायें पवित्रता के बल के आधार पर आधे कल्प विषय-वासना से मुक्त रहते हैं। अन्य आत्मायें जो द्वापर के बाद आती हैं, उनमें भी पवित्रता का बल रहता है, जिससे वे जीवनमुक्त स्थिति का अनुभव करती हैं, परन्तु उनका जन्म भोगबल से होता है और वे भी अपनी सन्तान को भोगबल से जन्म देते हैं। संगमयुग के सिवाए और सारे कल्प हर आत्मा का पवित्रता का बल पार्ट के साथ दिनोंदिन क्षीण होता रहता है।

पवित्रता का बल, साइलेन्स का बल हर आत्मा में स्वभाविक रहता है परन्तु नम्बरवार। जब आत्मा देहाभिमान के वश हो जाती है, तो वह पवित्रता का बल काम नहीं करता है, फिर कल्पान्त में आत्मायें योगबल से या अन्त में सज़ायें भोगकर अपना विकर्मों खाता और देहाभिमान का खाता खत्म कर परमधाम जाती है तो पवित्रता का बल और साइलेन्स का पुन: जाग्रत हो जाता है, जिससे फिर जब पार्ट में आती है तो वह काम करता है। कल्पान्तु में आत्मा का परमात्मा से योग होता है तो पवित्रता का बल और साइलेन्स का बल चढ़ती कला में होता है, जिससे वह विश्व-कल्याण का काम करता है। बिना योगबल से गिरती कला में रहता है।

''बाप आकर सबको मुक्ति-जीवनमुक्ति देते हैं। मुक्ति-जीवनमुक्ति सबको मिलती है, परन्तु स्वर्ग की जीवनमुक्ति सभी को नहीं मिलती है। सभी तो सतयुग में नहीं आयेंगे। सतयुग में वे ही आयेंगे, जो राजयोग सीखते हैं, पुरुषार्थ से पावन बनते हैं। ... और सब अपने पार्ट अनुसार जीवनमुक्ति को पायेंगे। हर एक आत्मा जब परमधाम से आकर यहाँ शरीर धारण करती है तो पहले जीवनमुक्त रहती है।''

सा.बाबा 6.07.13 रिवा.

''इसी प्रकार साइलेन्स की शक्ति द्वारा अनुभव तब कर सकेंगे, जब बापदादा से निरन्तर क्लियर कनेक्शन होगा। वहाँ सिर्फ कनेक्शन होता है, लेकिन यहाँ कनेक्शन अर्थात् रिलेशन सभी क्लियर अनुभव होंगे, तब ही मन्सा शक्ति का प्रत्यक्ष प्रमाण देख सकेंगे। ... जब आत्मिक शक्ति वाली, सेमी प्योर आत्मायें अपनी साधना द्वारा आत्माओं का आवाह्न कर सकती हैं, अल्पकाल के साधनों द्वारा दूर बैठी हुई आत्माओं को चमत्कार दिखाकर अपनी तरफ आकर्षित कर सकती हैं, तो परमात्म-शक्ति अर्थात् सर्वश्रेष्ठ शक्ति क्या नहीं कर सकती है!''

अ.बापदादा 26.1.77

''अप्राप्त आत्मा को, अशान्त-दुखी, रोगी आत्मा को दूर बैठे भी शान्ति, शक्ति, निरोगीपन का वरदान दे सकते हो। ... शक्तियों के जड़ चित्रों में वरदान देने का स्थूल रूप हस्तों के रूप में दिखाया है, हस्त भी एकाग्र रूप दिखाते हैं। वरदान का पोज़ हस्त, दृष्टि और संकल्प एकाग्र ही दिखाते हैं। ऐसे चेतन्य रूप में एकाग्रचित्त की शक्ति को बढ़ाओ, तो रूहों की दुनिया में रुहानी सेवा होगी अर्थात् रूहों का आवाह्न करके रुहानी सेवा करें।''

अ.बापदादा 26.01.77

''तुम जानते हो अभी अज्ञान सागर से हमारी आत्मा रूपी नैया पार जा रही है, नैया का खिवैया बाप है। ... अभी बाप तुमको अविनाशी ज्ञान रतनों का दान देते हैं और कहते हैं - तुम मीठी-मीठी आत्मायें मुझ बाप को याद करो। यह बाप की याद ही विश्व के लिए तुम्हारा योगदान है। ... अभी तुम बच्चों ने इस ड्रामा के आदि-मध्य-अन्त को जाना है। जो कुछ होता आया है, वह सब ड्रामा में नूँध है।''

सा.बाबा 10.07.13 रिवा.

Q. आवाज़ से परे शान्त स्वरूप की स्थिति क्या है? कई सन्यासी मौन व्रत धारण करते तो उसको शान्त स्वरूप कहेंगे? यदि कहेंगे तो क्यों और नहीं कहेंगे तो क्या कहेंगे?

शान्ति का भी एक बल है। आवाज़ से परे शान्त स्वरूप स्थिति अर्थात् देह में रहते देह से न्यारे बिन्दुरूप की स्थिति, अव्यक्त रूप में स्थित हो अव्यक्त रूपधारी बाप के साथ की स्थिति, अपने भृकुटी के अकाल तख्तनशीन होकर साक्षी होकर विश्व-नाटक को देखना और ट्रस्टी होकर पार्ट बजाना। सन्यासी मौन में रहते हैं तो

उनको भी कई सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं, जिनके आधार पर वे मन्सा शक्ति से कई काम करते हैं परन्तु उसके होते भी उनकी चढ़ती कला नहीं होती है। अभी परमात्मा जो आवाज़ से परे शान्त स्वरूप की स्थिति में स्थित रहने के लिए कहते हैं, उससे हमारी आत्मिक शक्ति बढ़ती है और विश्व-कल्याण का कर्तव्य होता है।

''सभी आवाज़ से परे अपने शान्त स्वरूप स्थिति में स्थित रहने का अनुभव बहुत समय कर सकते हो? आवाज़ में आने का अनुभव ज्यादा कर सकते हो वा आवाज़ से परे रहने का अनुभव ज्यादा समय कर सकते हो? जितना लास्ट स्टेज अर्थात् कर्मातीत स्टेज समीप आती जायेगी, उतना आवाज़ से परे, शान्त स्वरूप की स्थिति अधिक प्रिय लगेगी।'' अ.बापदादा 7.01.77

''जैसे वाणी की शक्ति का, कर्म की शक्ति का प्रत्यक्ष परिणाम दिखाई देता है, वैसे ही सभी से पॉवरफुल साइलेन्स की शक्ति का प्रत्यक्ष प्रमाण देखा है, अनुभव किया है? जैसे वाणी द्वारा किसी आत्मा को परिवर्तन कर सकते हो, वैसे ही साइलेन्स की शक्ति द्वारा अर्थात् मन्सा द्वारा किसी आत्मा की वृत्ति, दृष्टि को परिवर्तन करने का अनुभव है?'' अ.बापदादा 26.01.77

''मन्सा द्वारा व साइलेन्स की शक्ति द्वारा कितनी भी स्थूल में दूर रहने वाली आत्मा हो, उसको सम्मुख का अनुभव करा सकते हो। जैसे साइन्स के यन्त्रों द्वारा दूर का दृश्य सम्मुख अनुभव करते हो, वैसे साइलेन्स की शक्ति से भी दूरी समाप्त हो सामने का अनुभव आप भी करेंगे और अन्य आत्मायें भी करेंगी। इसको ही योगबल कहा जाता है।'' अ.बापदादा 26.01.77

''साइलेन्स की शक्ति द्वारा सेवा करने के लिए विशेष एकाग्रता चाहिए। संकल्पों की भी एकाग्रता, स्थिति की भी एकाग्रता। एकाग्रता का आधार है - अन्तर्मुखता। अन्तर्मुखता में रहने से अन्दर ही अन्दर बहुत कुछ विचित्र अनुभव करेंगे। ... आत्माओं का आवाह्न करना, आत्माओं से रूह-रुहान करना, आत्माओं के संस्कार-स्वभाव को परिवर्तन करना, आत्माओं का बाप से कनेक्शन जुड़वाना, ऐसे रुहानी लीला का अनुभव कर सकते हो।'' अ.बापदादा 26.01.77

''इस रुहानियत के अनुभव कराने की सेवा के लिए सर्विसएबुल आत्माओं को विशेष उस दिन एकाग्रता का, अन्तर्मुखता का व्रत रखना पड़ेगा। इस व्रत से

वृत्तियों को परिवर्तन करेंगे। ... व्यर्थ संकल्प, व्यर्थ बोल, व्यर्थ कर्म की हलचल से परे एकाग्रता अर्थात् रुहानियत में रहने का व्रत लेना पड़े, तब आत्माओं को ज्ञान सूर्य का चमत्काभ्र दिखा सकेंगे।'' अ.बापदादा 26.01.77

Q. पवित्रता का बल, आत्म-बल, संकल्प-शक्ति, योगबल चारो में क्या अन्तर है और चारो का परस्पर क्या सम्बन्ध है?

आत्म-बल के आधार पर आत्मा सारे कल्प आत्मा अपने पार्ट अनुसार भिन्न-भिन्न देह धारण कर पार्ट बजाती है, जिसमें अच्छा-बुरा दोनों पार्ट चलता है।

पवित्रता अर्थात् ब्रह्मचर्य का भी अपना बल है, जो आत्मा को परमात्मा से मिलता है क्योंकि परमात्मा पतित-पावन है परन्तु जो आत्मायें परमात्मा के द्वारा सिखाये गये योग से पावन बनती हैं, वे अपने उस योगबल के आधार पर श्रेष्ठ कर्म करके स्वर्ग के लिए श्रेष्ठ प्रॉलब्ध संचित करती हैं और जो आत्मा अन्त में पश्चाताप, कर्मभोग आदि के द्वारा पावन बनती हैं, वे द्वापर-कलियुग में अपने पार्ट के आधा समय जीवनमुक्ति के सुख का अनुभव करती हैं। समयान्तर में जब पवित्रता का बल खत्म हो जाता है तो आत्मा देहाभिमान के वशीभूत विकर्मों में प्रवृत्त हो जाती, जिससे आत्मा को दुख-अशान्ति भोगनी पड़ती है। पवित्रता का बल आत्मा को विकर्म करने से रोकता है और श्रेष्ठ कर्म करने के लिए प्रेरित करता है परन्तु आत्मा संगमयुग के अतिरिक्त कभी भी श्रेष्ठ कर्म नहीं कर पाती है क्योंकि आत्मा को श्रेष्ठ कर्म का न ज्ञान होता है और न ही शक्ति होती है, इसलिए आत्मा में पवित्रता का बल होते भी उसके आत्म-बल की सतत उतरती कला होती है। पवित्रता के बल से विहीन आत्मा पाप कर्मों में प्रवृत्त हो जाती है, जिससे आत्मा का पाप का खाता बढ़ता जाता है, जिससे उसके स्वयं के जीवन में और समग्र विश्व में दुख-अशान्ति निरन्तर बढ़ती जाती है।

संगमयुग पर जब आत्मा को परमात्मा से यथार्थ ज्ञान मिलता, परमात्मा के साथ सम्बन्ध जुटता है अर्थात् परमात्मा से योग होता है, तब आत्मा में नीहित आत्म-बल और पवित्रता का बल जागृत होता है। योगबल से आत्मा का पाप का खाता खत्म होता है और आत्मा श्रेष्ठ कर्म करके पुण्य का खाता जमा करती है, आत्मा को अपने मूल गुणों का ज्ञान होता है, जिससे उनके प्रति आकर्षण होती है तब पवित्रता

का बल आत्मा में आता है, जो सारे कल्प आत्मा में रहता है परन्तु उसकी डिग्री कम होने से देहाभिमान आत्मा पर हावी हो जाता है, जिससे आत्मा विकारों के वशीभूत होकर विकर्मों में प्रवृत्त होकर दुख-अशान्ति को पाती है। अन्त में आत्मा का पवित्रता का बल निष्क्रिय हो जाता है और आत्मा स्वछन्द होकर विकर्मों में प्रवृत्त हो जाती है। तब कल्पान्त में परमात्मा आकर ज्ञान देते हैं और राजयोग सिखाते हैं, जिससे आत्मा का परमात्मा से योग होता है, जिस योगबल से आत्माओं का आत्म-बल और पवित्रता का बल जागृत होता है, जिससे नई दुनिया सतयुग की स्थापना होती है।

परमात्मा सर्वशक्तिवान है अर्थात् उसमें सर्व बल हैं, परन्तु जब वह किसी आत्मा के देह में आता है, तब ही उसके बल का आभास होता है। परमात्म-बल के आधार पर सर्व आत्माओं को मुक्ति-जीवनमुक्ति मिलती है, नई दुनिया की स्थापना, पुरानी दुनिया का विनाश होता है। परमात्म-बल के आधार पर कल्प-वृक्ष की कलम लगती है अर्थात् पुराने कल्प-वृक्ष से नये कल्प-वृक्ष की स्थापना होती है। परमात्म-बल के द्वारा ही जड़-जंगम-चेतन सभी प्रकृतियाँ पावन बनती हैं। परमात्म-बल से आत्माओं को अनेक प्रकार के साक्षात्कार होते हैं, जिससे उनको पवित्र बनने की प्रेरणा मिलती है। परमात्म-बल ही सर्व प्रकार के बलों का आधार है।

शान्ति का भी बल है। द्वापर से आत्मायें जो हठयोग आदि की साधना करती हैं, उससे आत्माओं को विभिन्न सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं, जिनके द्वारा वे मान-सम्मान को प्राप्त करते हैं। परन्तु यथार्थ ज्ञान न होने से उन सिद्धियों का यथार्थ प्रयोग करने में असमर्थ होने से वे सिद्धियाँ समाप्त हो जाती हैं।

संकल्प-शक्ति अर्थात् आत्म-बल, जो सर्व आत्माओं में होती है, जिसके आधार पर हर आत्मा अपना पार्ट बजाती है परन्तु जब परमात्म शक्ति से प्रभावित होती है तो चढ़ती कला में जाती है और परमात्मा के साथ विश्व-कल्याण के कर्तव्य में सहयोगी बनती है, जिसके फलस्वरूप वे आत्मायें नये विश्व अर्थात् स्वर्ग में राज-भाग पाती हैं। जब आत्मा पवित्रता की शक्ति से प्रभावित होता है तो सुख-शान्ति की अनुभूति करती है अर्थात् जीवनमुक्त स्थिति का अनुभव करती है

और जब पवित्रता का बल क्षीण हो जाता है तो आत्मा देहाभिमान के वश विकारों में प्रवृत्त होकर विकर्म करती है, जिसके फलस्वरूप दुख-अशान्ति अर्थात् जीवन-बन्ध का अनुभव करती है।

Q. सन्यासियों के योग और परमात्मा जो योग सिखाते, उसमें क्या अन्तर है तथा पवित्रता के बल और योगबल में क्या अन्तर है?

''पवित्रता में सुख भी है तो मान भी है। सन्यासियों का कितना मान है, बन्धनमुक्त हो जाते हैं। वह है पवित्रता का बल, वह कोई योग का बल नहीं है। योगबल सिर्फ तुम्हारे पास है। उन्होंका तो है तत्व से योग, जहाँ रहते हैं, उससे योग लगाते हैं। जैसे 5 तत्व हैं, वैसे वह फिर छटा तत्व है, उसको वे ब्रह्म व ईश्वर कह देते हैं, इसलिए वह योग आर्टीफिशियल है। उस योग से विकर्म विनाश नहीं होते हैं।(हम जब परमात्मा को याद करते हैं तो विकर्म विनाश होते हैं)''

सा.बाबा 7.02.13 रिवा.

''सन्यासी ब्रह्म तत्व से योग लगाते हैं, इसलिए वह योग आर्टीफिशियल है। उस योग से विकर्म विनाश नहीं होते हैं।... अगर उनको निश्चय होता कि ब्रह्म से योग लगाने से पावन बनते हैं तो फिर गंगा स्नान नहीं करते। इससे सिद्ध है कि उनका योग यथार्थ नहीं है। जैसे हिन्दू कोई धर्म नहीं है, वैसे ब्रह्म भी ईश्वर नहीं है। रहने के स्थान को ईश्वर समझ लेते हैं।'' सा.बाबा 7.02.13 रिवा.

पवित्रता का बल अर्थात् ब्रह्मचर्य का बल। सन्यासी पवित्रता की धारणा के लिए घरबार, गृहस्थ परिवार का सन्यास करके, जंगल में जाकर विभिन्न प्रकार से व्रत-नियम अपनाकर तपस्या करते, ब्रह्म को याद करते हैं, जिससे उनकी पवित्रता अर्थात् ब्रह्मचर्य की धारणा स्थिर रहती है और शान्ति की अनुभूति होती है। उस पवित्रता की धारणा से उनकी आत्मिक शक्ति के ह्रास की जो गति है, वह मन्द हो जाती है। ब्रह्म को याद करने या मन-बुद्धि को भृकुटी में, किसी बिन्दु पर, दीप-शिखा आदि पर एकाग्र करने से वे कुछ सिद्धियाँ भी प्राप्त करते हैं अर्थात् उनमें ब्रह्मचर्य को पालन करने की, भूत और भविष्य की कुछ बातों को जानने की, किसके मन की बात को जानने की, किसको वरदान-अभिषाप देने आदि की शक्ति आ जाती है, जिससे उनका मान होता है, उनकी महिमा होती है।

सन्यासियों में तपस्या और पवित्रता का बल है, परन्तु योगबल नहीं क्योंकि वे भी त्याग करके जंगलों जाकर साधना करते हैं परन्तु परमात्मा को न जानने के कारण उनका परमात्मा के साथ योग नहीं होता है, इसलिए उनका बल योगबल नहीं है। योगबल संगम पर ही ब्राह्मण आत्माओं में होता है, जिससे आत्मा और विश्व की चढ़ती कला होती है। तपस्या और पवित्रता के बल से उनको विभिन्न सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं, जिससे उनकी महिमा होती है, परन्तु चढ़ती कला नहीं होती है। धीरे-धीरे उनकी वह शक्ति भी कम होती जाती है।

''ज्ञान, भक्ति और वैराग्य कहते हैं। वैराग्य से त्याग होता है। सन्यासी पहले वैराग्य दिलाते हैं कि यह सुख काग विष्टा समान है।... सन्यासी पहले सतोप्रधान थे तो बहुत तीखे थे, जंगलों में ही उनको भोजन मिलता था। पवित्रता की ताकत थी। ऐसे नहीं कि परमपिता परमात्मा शिव की ताकत थी। अभी तुमको उनकी ताकत मिलती है।'' सा.बाबा 28.06.13 रिवा.

''तुम हो लकी स्टार्स, तब तो सब माथा टेकते हैं। यह सारी पवित्रता की बलिहारी है, इसलिए बाप कहते हैं काम महाशत्रु है, इसको जीतो। तुम जितना सर्वशक्तिमान परमात्मा के साथ योग लगायेंगे, उतना पवित्र होते जायेंगे। अभी तुमको उनकी ताक़त मिलती है।'' सा.बाबा 28.06.13 रिवा.

वैसे भी भारत में ब्रह्मचर्य की धारणा का महत्व है, उसके कारण ही कुमारियों की पूजा करते हैं, उनको विशेष मान देते हैं। कोई व्रत, पूजा, अनुष्ठान आदि करते तो ब्रह्मचर्य की पालना करते अर्थात् उन दिनों काम विकार में नहीं जाते, मन्दिरों आदि पवित्र स्थानों में विषय-भोग नहीं करते। ऐसे ही अन्य धर्मों में भी धार्मिक क्षेत्र में ब्रह्मचर्य का विशेष स्थान है, जिससे ब्रह्मचर्य की धारणा वाले का मान होता है।

ब्रह्मचर्य अर्थात् पवित्रता की धारणा के बल से आत्मा का मान तो होता है, उसको उपर्युक्त बातों का लाभ भी होता है परन्तु उसकी चढ़ती कला नहीं हो सकती है अर्थात् आत्मिक शक्ति का विकास नहीं होता है, वह सतत उतरती कला में ही जाती है और न ही उनके उस पुरुषार्थ से विश्व की चढ़ती कला हो सकती है। उस धारणा के बल से उन आत्माओं के पूर्व जन्मों के विकर्म भी विनाश नहीं हो

सकते और न ही वे सुकर्म करने में समर्थ होते हैं, जिससे उनकी चढ़ती कला नहीं होती है, बल्कि सतत उतरती कला ही रहती है। सुकर्मों से आत्मा की चढ़ती कला होती है। पवित्रता की धारणा करते हुए भी उन आत्माओं की और सारे विश्व उतरती कला ही रहती है, जिससे उन आत्माओं के जीवन में और समग्र विश्व में दुख-अशान्ति की निरन्तर वृद्धि होती जाती है, जिसको भले वे आत्मायें समझ न पायें। जैसे किसी मकान की रिपेरिंग करने से मकान नया नहीं होता है, परन्तु उसका पतन कुछ हद तक रुक जाता है। ऐसे ही पवित्रता की धारणा से आत्मा की उतरती कला की गति मन्द होती है, चढ़ती नहीं है।

योगबल अलग चीज़ है, जो परमात्मा के द्वारा सिखाये गये योग से आत्मा को प्राप्त होता है। जब आत्मा का परमात्मा से सम्बन्ध होता है, तो आत्मा को स्वयं के स्वरूप का, परमात्मा के स्वरूप का, इस बेहद के विश्व-नाटक का, उसके विधि-विधानों का, कर्मों की गहन गति का ज्ञान मिलता है, जिससे आत्मा अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर परमात्मा को याद करती है, तब आत्मा को विशेष बल प्राप्त होता है, जिसको योगबल कहा जाता है, उस योगबल से आत्मा की और विश्व की चढ़ती कला होती है, आत्मा को अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति होती है, आत्मा के कर्मों में श्रेष्ठता आती है, आत्मा अपने विकर्मों के खाते को भस्म कर अन्त में कर्मातीत बनकर वापस घर जाती है।

आत्मा को परमात्मा के साथ योगयुक्त होने से जो बल प्राप्त होता है, उससे एक तो आत्मा के पूर्व जन्मों के विकर्म विनाश होते अर्थात् आत्मा का पाप कर्मों का खाता खत्म होता है और आत्मा उस योग बल के आधार पर और परमात्मा से योगयुक्त होने से उनकी श्रीमत पर श्रेष्ठ कर्म करती है, जिससे उसका भविष्य 21 जन्मों के लिए श्रेष्ठ कर्मों का अर्थात् पुण्य का खाता जमा होता है, जिससे उस आत्मा की और विश्व की चढ़ती कला होती है।

परमात्मा के साथ योग लगाने से आत्मा में ज्ञान-गुण-शक्तियों की धारणा होती है, विश्व-नाटक के अनेक गुह्य रहस्यों का बुद्धि में स्पष्टीकरण होता है, जिससे आत्मा को आनन्द की अनुभूति होती है। जब आत्मा अपने घर ब्रह्मलोक को याद कर परमात्मा की याद में निर्संकल्पावस्था को प्राप्त होती है तो आत्मा को परम-

शान्ति, परम-शक्ति की अनुभूति होती है। जब आत्मा अपने को देह से न्यारा समझ परमात्मा के साथ योगयुक्त होकर विश्व-कल्याण का चिन्तन करती है, विश्व-कल्याणार्थ संकल्प करती है तो आत्मा को परमानन्द की अनुभूति होती है और उससे अन्य आत्मायें तथा तत्व भी पावन बनते हैं। जब आत्मा विश्व-नाटक की यथार्थता को जानकर अपने अकाल तख्तनशीन होकर साक्षी होकर इस विश्व-नाटक को देखती है और ट्रस्टी बनकर पार्ट बजाती है तो आत्मा को परम-सुख की अनुभूति होती है। ये सब अनुभूतियाँ सन्यासियों को पवित्रता की धारणा से नहीं हो सकती है क्योंकि यह ईश्वरीय वरदान है, जो आत्मा को योगबल से संगम पर ही प्राप्त होता है।

पवित्रता अर्थात् ब्रह्मचर्य योग का आधार है अर्थात् योगाभ्यास के लिए मूल धारणा है। बिना ब्रह्मचर्य की पालना के आत्मा का परमात्मा से सम्बन्ध जुट ही नहीं सकता है अर्थात् योग लग नहीं सकता। भले ही आत्मा पहले ब्रह्मचर्य की धारणा हठ से या परमात्मा की आज्ञा मानकर ही करती है परन्तु जब आत्मा, परमात्मा के ज्ञान और विश्व-नाटक के विधि-विधानों को जानकर योगाभ्यास करती है तो वह धारणा पक्की हो जाती है, जिससे उसकी वह धारणा स्वभाविक हो जाती है। उस धारणा के आधार पर आत्मा भविष्य नई दुनिया में देव पद पाती हैं। ''आगे सन्यासी पैसे के लिए सन्यास नहीं करते थे, वे तो इस दुनिया से तंग आकर जंगल में शान्ति के लिए चले जाते थे। बाकी पवित्र रहते हैं, पवित्रता के बल से भारत को थमाते हैं। यह भी भारत को सुख देते हैं। वे पवित्र नहीं बनते तो भारत टू मच वेश्यालय बन जाता। पवित्रता सिखलाने वाले, यह एक निवृत्ति मार्ग वाले हैं, दूसरा है बाप। बाप प्रवृत्ति मार्ग की पवित्रता सिखलाने वाला है। भारत में पवित्र प्रवृत्ति मार्ग था, देवी-देवतायें पवित्र थे।'' सा.बाबा 8.02.13 रिवा.

''हम अशरीरी हैं, बाप से योग लगाते हैं तो विकर्म विनाश होते जाते हैं। भल कोई सन्यासी से तुमको शान्ति मिले, परन्तु उससे विकर्म विनाश नहीं हो सकते हैं। यहाँ बाप को याद करने से तुम विकर्माजीत बनते जायेंगे। उनके शान्ति में बैठने से करके विकर्म नहीं होंगे, परन्तु पुराने विकर्म विनाश नहीं हो सकते। सिवाए इस योगबल के पुराने विकर्म किसी भी हालत में किसके विनाश हो नहीं सकते।''

सा.बाबा 8.02.13 रिवा.

''सतयुग में नेचुरल ब्युटी रहती, जिससे वहाँ ब्युटी के साथ हेल्थ भी रहती है। यहाँ क्रीम-पाउडर आदि लगाकर शोभनीक बनते हैं, इसलिए ब्युटी के साथ हेल्थ नहीं रहती है। देवताओं की मूर्तियाँ भी कितनी शोभनीक बनाते हैं। ... ज्ञान-योग की कितनी बलिहारी है। कमाल है बाबा के ज्ञान बल की जो आत्मा बिल्कुल पवित्र बन जाती है, 5 तत्व भी प्योर हो जाते हैं।''

सा.बाबा 7.02.13 रिवा.

योगबल से आत्माओं का अपना, सन्यासियों सहित समग्र विश्व की सर्वात्माओं का कल्याण होता है अर्थात् सबको मुक्ति-जीवनमुक्ति मिलती है, इसलिए परमात्मा को मुक्ति-जीवनमुक्ति दाता कहा जाता है। परमात्मा जो योग सिखाते हैं, उससे न केवल आत्मायें पावन बनती बल्कि 5 तत्व भी पावन बनते हैं।

वास्तविकता ये है कि परमात्मा आकर जब योग सिखाते हैं, उससे सभी आत्मायें और 5 तत्व पावन बनते हैं, आत्मायें पवित्र बनकर घर वापस जाती हैं और फिर जब अपने नये पार्ट में आती हैं तो उस पवित्रता के आधार पर सन्यासी घरबार का सन्यास करके पवित्रता अर्थात् ब्रह्मचर्य का पालन करते हैं, देवतायें स्वर्ग में आकर देवताई पार्ट बजाते हैं, जिनमें ब्रह्मचर्य का बल स्वत: रहता है। इसीलिए गायन है कि देवताओं ने ब्रह्मचर्य के बल से मृत्यु को जीता है। परमात्मा के द्वारा सिखाये गये योग के बल से ही विश्व का नव-निर्माण होता है अर्थात् पुरानी विश्व का विनाश और नये विश्व का शुभारम्भ होता है।

सन्यासियों की पवित्रता के बल से विकर्म अवश्य कम होते हैं परन्तु विकर्मों का विनाश नहीं होता है परन्तु योगबल से विकर्म विनाश होते हैं और सुकर्म करने की शक्ति मिलती है, जिससे आत्मा सुकर्म करके सतयुग-त्रेता अर्थात् स्वर्ग में जाने का अधिकार प्राप्त करता है, जहाँ उसकी वह पवित्रता 21 जन्मों अर्थात् आधे कल्प तक स्थिर रहती है।

''अभी बाप तुमको राजयोग सिखाते हैं, इस योगबल से तुम विश्व की राजधानी स्थापन करते हो। इसमें हिसा की कोई बात नहीं। इसको अहिंसक लड़ाई कहा जाता है। यह है योगबल की लड़ाई। बाबा के साथ योग लगाने से हम विकर्माजीत बनते हैं, फिर माया का कोई वार नहीं होगा। ... तुम्हारा दुश्मन है रावण, जिसकी

वर्ष-वर्ष एफीजी बनाकर जलाते हैं।'' सा.बाबा 9.02.13 रिवा.

''अबलाओं पर तो विष के कारण बहुत अत्याचार होते हैं। उनका भी बच्चों आदि में मोह रहता है। इसमें तो पूरा नष्टोमोहा बनना होता है।... सन्यासियों को भी नष्टोमोहा होने में मेहनत लगती है क्योंकि उनके पास प्राप्ति की कोई एम एण्ड ऑब्जेक्ट नहीं है। उनको किससे कोई ताक़त नहीं मिलती है, तुमको तो बाप से कितनी ताक़त मिलती है। एक बाप ही पवित्रता का सागर है। तुमको उनसे पवित्रता का वर्सा मिलता है।'' सा.बाबा 13.04.13 रिवा.

''तुम बाप से योग लगाते हो तो तुमको बाप से ताक़त मिलती है। सन्यासी तो ब्रह्म तत्व से योग लगाते हैं। ब्रह्म से तो कोई ताक़त मिल न सके। यह प्वाइन्ट अच्छी रीति धारण करने की है। ... अपने धर्म को भूलकर हिन्दू कहना, ब्रह्म तत्व को परमात्मा कहना बड़ी भूल है परन्तु यह भूल भी ड्रामा में नूँध है। माया भूलें कराती है, फिर बाप आकर अभूल बनाते हैं।'' सा.बाबा 13.04.13 रिवा.

वर्तमान जगत में हम देखते हैं कि अनेक धर्म-गुरु अपनी संकल्प शक्ति से या आत्म-बल से अनेक चमत्कारिक कार्य करते रहते हैं अर्थात् तन्त्र-मन्त्र, जप-तप, अनुष्ठान आदि के द्वारा अनेक असाध्य रोगों का निदान कर देते हैं, अनेक चमत्कार दिखाते हैं, जिससे आत्मायें प्रभावित होती हैं, जो समाचार पत्रों में आते रहते हैं। कई आत्मायें ज्ञान मार्ग में भी संकल्प-शक्ति के ये सिद्धान्त उपयोग में लाते हैं तो उसे योगबल कहा जाये, आत्म-बल कहा जाये या संकल्प-शक्ति की सिद्धि कहा जाये? विचारणीय है कि क्या योगबल वाली आत्मायें अपने योगबल को भौतिक प्राप्तियों में उपयोग करेंगे और यदि करेंगे तो किस हद तक करेंगे। योगबल परमात्मा ने हमको आत्म-कल्याण, विश्व के नव-निर्माण के अर्थ दिया है अर्थात् सिखाया है, न कि अल्पकाल की प्राप्तियों के लिए। जब हम योगबल को आत्म-कल्याण और विश्व के नव-निर्माण के अर्थ करते हैं तो उससे हमारी आत्मिक शक्ति बढ़ती है और हमको आत्म-सन्तुष्टि होती है और जब हम उनको अल्पकाल की भौतिक प्राप्तियों या कार्यों की सिद्धि के लिए करते हैं तो अन्य धर्म-गुरुओं के समान अल्पकाल का मान-शान मिलता है। भले ही कर्मभोग और कर्म-बन्धन के समय वह प्रयोग आवश्यक लगता है, परन्तु वह यथार्थ है या

अयथार्थ है, यह विचारणीय है।

Q. क्या देवताओं में योगबल होता है? यदि होता है तो उसका प्रमाण क्या है और यदि नहीं होता है तो उनमें कौनसा बल होता है?

वास्तव में देवताओं में योगबल नहीं होता है, क्योंकि उनको न ही योग का ज्ञान है और न ही सतयुग में उनका परमात्मा से योग अर्थात् सम्बन्ध है। योगबल संगम पर ही होता है, जब परमात्मा आकर आत्माओं को आत्मा, परमात्मा और विश्व-नाटक का ज्ञान देते हैं और योग सिखलाते हैं। जिस योग से आत्मायें अपने पुराने विकर्मों का खाता खत्म करके पावन बनती हैं और सुकर्म कर के देवता बनती है, जिससे स्वर्ग की स्थापना होती है और नर्क का विनाश होता है अर्थात् रावण राज्य खत्म होता है। इसलिए देवताओं के बल को योगबल नहीं कहेंगे, पवित्रता का बल कहेंगे अर्थात् देवताओं में योगबल नहीं होता है परन्तु उन्होंने अपने पूर्व जन्म में योगबल के आधार पर जो पवित्रता का बल संचित किया है, वह होता है परन्तु वह बल भी निरन्तर क्षीण होता जाता है, जिसके परिणाम स्वरूप देवतायें द्वापर से वाम मार्ग में चले जाते हैं। योगबल से तो आत्मा और विश्व की चढ़ती कला होती है। योगबल संगमयुग की विशेष प्राप्ति है और आत्माओं को परमात्मा का विशेष वरदान है।

देवताओं में मन्सा शक्ति अर्थात् आत्मिक शक्ति और पवित्रता की शक्ति होती है, जिसके आधार पर वे सन्तानोत्पत्ति करते हैं, परन्तु उसको योगबल नहीं कहा जा सकता क्योंकि योगबल से आत्मा और विश्व की चढ़ती कला होती है, देवतायें तो उतरती कला में होते हैं। उन्होंने योगबल से संगम पर वह शक्ति प्राप्त की है। जैसे सतयुग में ज्ञान नहीं होता है, ज्ञान की प्रॉलब्ध होती है। बाबा का कहने का भाव अलग होता है, शब्द अलग होते हैं।

''सतयुग में एक बच्चा और एक बच्ची होती है, सो भी योगबल से। पहले से साक्षात्कार होता है। जैसे अभी तुमको साक्षात्कार होता है कि हम प्रिन्स-प्रिन्सेज बनेंगे।... लक्ष्मी को जगत अम्बा नहीं कहेंगे, लक्ष्मी कोई ब्रह्माकुमारी नहीं है। ब्रह्मा कुमार-कुमारी यहाँ है। सरस्वती है ब्रह्मा की मुख वंशावली। ब्रह्माकुमारी सरस्वती को जगत-अम्बा कहा जाता है।'' सा.बाबा 25.06.13 रिवा.

Q. योग और योगबल क्या है? क्या योग से आत्मा को परमात्मा से बल मिलता है? यदि बल मिलता है तो कैसे और यदि नहीं मिलता है तो क्या होता है?

योग माना सम्बन्ध अर्थात् आत्मा का परमात्मा से सम्बन्ध। जब आत्मा को परमात्मा से यथार्थ ज्ञान मिलता है तो उस ज्ञान की धारणा से आत्मा का परमात्मा से सम्बन्ध जुटता है, आत्मा को परमात्मा की याद होती है और आत्मा अपने ऊपर परमात्मा की छत्रछाया अनुभव करती है, जिससे आत्मा की सुसुप्त शक्तियाँ जागृत होती हैं, जिसके फलस्वरूप आत्मा अपने में बल अनुभव करती है। आत्मा को परमात्मा से कोई बल मिलता नहीं है बल्कि आत्मा परमात्मा की वंशधर है, इसलिए आत्मा में बल स्वत: नीहित रहता है परन्तु विस्मृति के कारण आत्मा अपने को बलहीन अर्थात् निर्बल अनुभव करती है। जब आत्मा का परमात्मा से सम्बन्ध जुटता है, तो परमात्मा की उस याद अर्थात् योग से आत्मा में नीहित ज्ञान-गुण-शक्तियाँ जागृत होती है, इसलिए कहा जाता है कि परमात्मा से बल मिलता है। उस योगबल से आत्मा अपने पूर्व के विकर्मों के खाते को भस्म करके पवित्र बनती है और सुकर्म करके भविष्य के लिए पुण्य का खाता जमा करती है। यह योगबल आत्मा में संगम पर ही होता है, और तो सारे कल्प अभी के योगबल से आत्मा पवित्रता का जो बल जमा करती है, उसके आधार पर पार्ट बजाती है।

''परमात्मा ही आकर इस ड्रामा के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान देते हैं और पतित से पावन बनाते हैं। ... अभी तुम्हारी आत्मा जानती है हमारा पार्ट पूरा हुआ, अब हमको यह शरीर रूपी वस्त्र छोड़ना है, इसलिए इसमें ममत्व नहीं रखना है। ... तुम बच्चे जानते हो - बरोबर भारत में देवी-देवताओं का राज्य था, अभी हम फिर वह राज्य ले रहे हैं। सिवाए योगबल के कोई विश्व का मालिक बन न सके।''

सा.बाबा 13.06.13 रिवा.

Q. योगबल का यथार्थ प्रयोग किसको कहेंगे?

जो आत्मा, परमात्मा और ज्ञान की ओर आकर्षित करे, ज्ञान की यथार्थ समझ प्रदान करे, किसी सीमित लक्ष्य के लिए नहीं लेकिन आत्मा को सम्पूर्णता की ओर आकर्षित करे, आत्मिक स्वरूप का अनुभव कराये, शुभ कर्मों में प्रवृत्ति जागृत करे।

संकल्प शक्ति के प्रयोग में भी परमात्मा बीच में है तो वह योगबल है और वह उस आत्मा को चढ़ती कला की ओर ले जायेगा।

अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित हो परमात्मा को याद करते हैं तो हमारे सभी आवश्यक भौतिक कार्य स्वत: सिद्ध होते हैं, उसके लिए संकल्प करने की भी आवश्यकता नहीं होती है।

बाबा ने राज़ बताया है कि नई आत्मायें आती हैं तो उनमें आत्मिक बल होता है, जिससे उनके संकल्प और शब्द सिद्ध होते हैं, उनकी महिमा होती है परन्तु उसको योगबल नहीं कहा जा सकता है। ऐसे दृढ़ निश्चय और विश्वास के साथ जो संकल्प करते हैं, वह सिद्ध होता है, परन्तु जब तक उस आत्मा को परमात्मा की याद नहीं है, तब तक उसको योगबल नहीं कहा जा सकता।

शुभ संकल्प से, एकाग्रता से, तन्त्र-मन्त्र आदि से संकल्प की सिद्धि तो होती है परन्तु बिना योगबल के वह शक्ति सतत् घटती जाती है। योगबल साथ होने से संकल्प-शक्ति बढ़ती है। योगबल संगम पर ही होता है, जब परमात्मा इस धरा पर आते हैं और आत्माओं का उनके साथ सम्बन्ध होता है।

योगबल वाले को रहता कि बाबा ने मदद की, इसलिए अपना अहंकार नहीं आता है। बिना योग के अहंकार आ सकता है और आता भी है।

''देही-अभिमानी बन बाप को याद करने से बल मिलेगा। तुम जब अच्छी रीति पहलवान हो जायेंगे तो भीष्म पितामह आदि को बाण लगेगा। यह सब धीरे-धीरे होना है। अभी तुम्हारे में बल आता जाता है।... आत्मा भिन्न-भिन्न शरीर लेकर भिन्न-भिन्न पार्ट बजाती है। बाकी ऐसे नहीं कि आत्मा कुत्ता, बिल्ली आदि बनती है। मनुष्यात्मा मनुष्य रूप में ही जन्म लेती है। जानवरों की वैराइटी अलग है।''

सा.बाबा 17.06.13 रिवा.

Q. ब्राह्मणों की पवित्रता, देवताओं की पवित्रता और सन्यासियों आदि की पवित्रता में क्या अन्तर है?

देवताओं की पवित्रता ब्राह्मण जीवन में किये गये पुरुषार्थ अर्थात् योगबल के आधार पर होती है, परन्तु वहाँ योगबल न होने के कारण उनकी पवित्रता उतरती कला की होती है। देवताओं का भल पूजन होता है, गायन नहीं। देवताओं का जो

गायन करते भी हैं, वह देवताओं, परमात्मा और ब्राह्मणों के कर्तव्यों का यथार्थ ज्ञान न होने के कारण करते हैं।

सन्यासियों की पवित्रता का भी मान है क्योंकि उनकी पवित्रता के आधार पर विश्व में ब्रह्मचर्य का महत्व रहता है परन्तु उनकी पवित्रता भी उतरती कला की पवित्रता है, इसलिए उसका भी इतना महत्व नहीं है। सन्यासियों की पवित्रता के बल पर भारत उतरती कला की गति मन्द हो जाती है। जिसके लिए परमात्मा ने कहा है कि सन्यासी अपने पवित्रता के बल से भारत को थमाते हैं, नहीं तो भारत और भी वेश्यालय बन जाता।

ब्राह्मणों की पवित्रता में पवित्रता अर्थात् ब्रह्मचर्य की धारणा के साथ योगबल भी होता है, इसलिए उनकी पवित्रता चढ़ती कला की पवित्रता है। ब्राह्मणों की पवित्रता के आधार पर विश्व का नव-निर्माण होता है अर्थात् आत्माओं के साथ तत्व भी पावन बनते हैं और विश्व में स्वर्ग की स्थापना होती है जिससे उनकी पवित्रता और कर्तव्यों का गायन होता है। ब्राह्मण ही अपनी पवित्रता और योगबल के आधार पर परमात्मा के साथ विश्व-नवनिर्माण का कर्तव्य करते हैं, इसलिए परमात्मा के साथ ब्राह्मणों का भी गायन होता है। योगबल ब्राह्मणों में ही होता है, जो पवित्रता का आधार है।

Q. आपघात अर्थात् जीवघात क्या है और कितने प्रकार से जीवघात करते हैं और उसका फल क्या होता है?

''मनुष्य आपघात भी बहुत खुशी से करते हैं। शिव पर, देवताओं पर झट बलि चढ़ जाते हैं। कोई दुखी होते तो आपघात कर लेते, वे आपघात करने वाले ऐसे नहीं समझते। दुख से आपघात करने वाले यहाँ ही एक शरीर छोड़ फिर भी यहाँ ही गन्दा जन्म लेते हैं।... जीवघात करने वालों में भी वैराइटी होती है। जैसे कि कोई-कोई स्त्री पति के पिछाड़ी अपना शरीर होम देती है, वह अलग बात है।''

सा.बाबा 8.02.13 रिवा.

जीवघात के विषय में अगर हम विचार करें तो देखेंगे कि जिन आत्माओं में आत्म-बल कम होता है और यथार्थ ज्ञान की कमी होती है, वे ही जीवघात करते

हैं। बाबा ने यह भी बताया है कि जीवघात की भी अनेक वैराइटी हैं। बलि चढ़ना, सती होना, जौहर करना, दुखी होकर जीवघात करना, आदि सभी आपघात अर्थात जीवघात ही हैं परन्तु हर एक की भावना अलग-अलग है, जिससे उसका फल भी अलग-अलग होता है।

जो आत्मायें देवताओं या शिव पर बलि चढ़ते हैं, वे अपने पापों से मुक्त होने अर्थात् मुक्ति की भावना से करते हैं। परन्तु उनका वह कर्म भी देहाभिमान के वशीभूत ही होता है क्योंकि उनको न आत्मा का सही ज्ञान है, न परमात्मा का सही ज्ञान है और न ही मुक्ति का यथार्थ ज्ञान है। वे तो उन मूर्तियों को ही परमात्मा समझ बलि चढ़ते हैं, इसलिए उससे उनकी चढ़ती कला नहीं हो सकती है और उनके उस कर्म को पुण्य कर्म भी नहीं कहा जा सकता है। इसलिए परमात्मा के नाम पर अज्ञानतावश बलि चढ़ते भी उनकी उतरती कला ही होती है। आत्मा का पुण्य कर्म तो तब ही कहा जाता है, जब उससे उसकी अपनी आत्मा का या किसी दूसरी आत्मा का कल्याण हो और वह कर्म परमात्मा की श्रीमत अनुसार हो। इस सम्बन्ध में बाबा ने भी कहा है काशी कलवट अर्थात् शिव पर बलि चढ़ने से उन आत्माओं के पूर्व के कुछ पाप खत्म हो जाते हैं, परन्तु आत्मा मुक्त नहीं हो सकती हैं। उनको दूसरा जन्म लेना ही पड़ता है और पुन: वे पाप कर्मों में प्रवृत्त हो जाते हैं। जो स्त्रियाँ सती होती हैं, वह भी आपघात अर्थात् जीवघात है परन्तु वे पति-प्रेम में पति के प्रति वफादारी के कारण अर्थात् अपने पतिव्रत धर्म को पालन करने की भावना से आपघात करती हैं, इसलिए उसको पाप नहीं कहा जा सकता है परन्तु उसको पुण्य भी नहीं कह सकते हैं। उनका वह कर्म अज्ञानतावश होता है, इसलिए उससे उनकी उतरती कला ही होती है। सती भी तीन प्रकार की होती हैं, एक पति प्रेम में सती हो जाती हैं, दूसरी लोक-लाज के वशीभूत मजबूरी से सती होती हैं, तीसरे समाज के लोग जबरदस्ती से सती होने के लिए बाध्य कर देते हैं तो सती होती हैं। तीनों प्रकार की सतियों का फल उनकी भावना के आधार पर अलग-अलग होता है। जो स्वेच्छा से पति-प्रेम में सती होती हैं, वह भी सुकर्म नहीं कहा जा सकता क्योंकि वह भी दैहिक प्रेम है और दैहिक प्रेम को सुकर्म नहीं कहा जा सकता अर्थात् पुण्य कर्म नहीं कहा जा सकता, इसलिए उससे भी आत्मा की

चढ़ती कला नहीं हो सकती है परन्तु उनके उस कर्म के आधार पर उनका मान अवश्य होता है। अन्य प्रकार से सती होने वालों के कर्म को तो पुण्य कर्म कहने का प्रश्न ही नहीं उठता है।

भारत में विशेषकर राजस्थान में अनेक राजघरानों की रानियों ने अपने पति के मरने पर और अपनी सेना के हारने पर शत्रु के हाथों पड़कर अपने सतीत्व और सम्मान की रक्षा के लिए जौहर किया है, उनका वह जौहर वीरता की निशानी कहा गया है, इसलिए उसको भी पाप कर्म नहीं कहा जा सकता है परन्तु उसको पुण्य कर्म भी नहीं कह सकते हैं। क्योंकि उससे न उनकी आत्मा का कल्याण होता है और न ही किसी दूसरे की आत्मा का कल्याण होता है अर्थात किसी की चढ़ती कला नहीं होती है परन्तु वह अपने सम्मान की रक्षार्थ होता है, इसलिए उनके उस कर्म के कारण उनका देश और समाज में सम्मान तो होता है, परन्तु आत्मा की जौहर करते भी उतरती कला ही होती है।

जो आत्मायें दुखी होकर आपघात करते हैं, उसको बाबा ने महापाप कहा है, दुनिया में भी आपघात महापाप कहा जाता है क्योंकि वे इस विश्व-नाटक के कर्म और फल के विधि-विधान को न जानने के कारण, अपने कर्तव्य पथ से विमुख होकर अज्ञानता के कारण आपघात करते हैं, इसलिए उसको महापाप कहा जाता है, जिसके फल स्वरूप उनको फिर अपने कर्मों का फल भोगने के लिए पतित जन्म लेना होता है क्योंकि उससे वे अपने पाप कर्मों से मुक्त नहीं होते हैं। आपघात करने वालों का आपघात करना कर्म के विधि-विधान के विपरीत है क्योंकि आत्मा को दुख अपने पाप कर्मों के वशीभूत होता है और वह आत्मा आपघात से अपने पाप कर्मों से मुक्त नहीं हो सकती है। आत्मा को अपने पाप कर्मों का फल भोगना ही पड़ेगा। हाँ ये कहा जा सकता है कि जो आपघात करता है, उससे पहले वह जो असह्य मानसिक पीड़ा को सहन करता है, इसलिए उस भोगना से कुछ पाप जरूर कम हो जाते होंगे।

वास्तविक आपघात तो अभी आत्मा करती है जब आत्मा, परमात्मा पिता को पहचान कर, उनकी बनकर, फिर संगदोष में आकर संशयबुद्धि होकर परमात्मा को छोड़ देती है, जिससे वे परमात्मा का, उनके द्वारा दिये गये ज्ञान का

और दैवी परिवार की निन्दा कराने के निमित्त बन जाते हैं, जिससे उनकी आत्मा का पतन हो जाता है। ऐसा आपघात करने वालों का यह पाप सबसे बड़ा पाप है, जिसका पश्चाताप आत्मा को इस जीवन में और अन्त में अवश्य करना पड़ता है। इसलिए परमात्मा पहले से ही ज्ञानी आत्माओं को आगाह करते हैं, सावधानी देते हैं कि वे कब ऐसा आपघात न करें और न ही उसके लिए कोई संकल्प करें।

सार रूप में देखें तो सृष्टि-चक्र के सफल संचालन में हर बल का महत्व है परन्तु कल्पान्त में विश्व परिवर्तन में योगबल का विशेष स्थान है, जिसके आधार पर ही विश्व-परिवर्तन होता है। जब सभी प्रकार के बल योगबल से प्रभावित होते हैं तो विश्व की चढ़ती कला होती है अर्थात् नये विश्व की कलम लगती है। अभी परमात्मा ने हमको योगबल का विधि-विधान बताया है, उस विधि-विधान को जो बुद्धि में रखेगा, उसकी निरन्तर चढ़ती कला होगी।

''यह साइन्स भी 100 वर्ष चलती है। अभी साइन्स ने कितना कमाल किया है। अभी बाकी थोड़े वर्ष हैं। साइन्स का घमण्ड 100 वर्ष से ही शुरू हुआ है। सतयुग के 100 वर्ष में तो पता नहीं क्या कर देंगे। वहाँ इन सब चीज़ों में बल रहता है, जो तुम यहाँ से ले जाते हो। सतयुग में अटल-अखण्ड, सुख-शान्तिमय राज्य करने के लिए बल तुम यहाँ से ले जाते हो।'' सा.बाबा 30.09.13 रिवा.

''सदा भाग्य-विधाता बाप द्वारा प्राप्त हुए अपने भाग्य को सुमिरण करते हुए, सदा हर्षित रहते हो? क्योंकि सारे कल्प के अन्दर सर्वश्रेष्ठ भाग्य इस समय ही प्राप्त करते हो। इस समय ही सदा भाग्यशाली स्थिति का अनुभव कर सकते हो। भविष्य नई दुनिया में भी ऐसा भाग्य प्राप्त नहीं होगा। तो जितना बाप बच्चों को श्रेष्ठ भाग्यशाली समझते हैं, उतना ही हर एक स्वयं को समझते हुए चलते हो? इसको ही कहा जाता है स्वमान में स्थित होना।'' अ.बापदादा 14.05.77

''अगर माया का बार-बार वार होता रहेगा तो अतीन्द्रिय सुख का अनुभव चाहते हुए भी कर नहीं पायेंगे। जो गायन है कि अतीन्द्रिय सुख संगमयुग का वरदान है - यह और किसी युग में नहीं होता है। यह अब का ही अनुभव है। अगर अभी अतीन्द्रिय सुख का अनुभव नहीं किया तो ब्राह्मण बनकर क्या किया! ब्राह्मणपन की विशेषता ही है - अतीन्द्रिय सुख। वह नहीं किया तो कुछ भी नहीं।''

अ.बापदादा 14.5.77 पार्टी

''सर्व द्वारा मान माँगने से नहीं मिलता है, लेकिन सम्मान देने और स्वमान में स्थित होने से, प्रकृति दासी के समान, स्वमान के अधिकार के रूप में मान प्राप्त होता है।... स्वमान में रहने वालों का सिर्फ इस एक जन्म में मान नहीं होता, लेकिन सारे कल्प में मान होता है।... इस एक जन्म में किये हुए इस पुण्य का फल सारा कल्प मिलता है।... सम्मान मिले - यह लेने की भावना भी रॉयल बेगरपन अर्थात् भिखारीपन है।'' अ.बापदादा 14.05.77

यह संगमयुग ही सारे कल्प में तीनों लोकों और तीनों कालों के गौरवमय स्वरूपों की अनुभूति का समय है। और तो सारे कल्प का पार्ट इसकी परछाई मात्र ही है।।

अमृत-धारा

इस विश्व-नाटक का यह अटल सत्य है कि जो हुआ वह टल नहीं सकता और जो नहीं हुआ वह हो नहीं सकता, परन्तु जो हुआ वह अच्छा हुआ, जो हो रहा है वह अच्छा है और जो होगा वह भी अच्छा होगा क्योंकि ये विश्व-नाटक सत्य, न्यायपूर्ण और कल्याणकारी है। पवित्रता ही जीवन है। पवित्रता अर्थात् आत्मिक स्वरूप में स्थिति, आत्मिक स्मृति, आत्मिक दृष्टि और आत्मिक वृत्ति। जहाँ पवित्रता है, वहाँ सर्व प्राप्तियाँ, सर्व सुख स्वत: होते हैं, इच्छामात्रम् अविद्या होती है; सर्व सम्बन्धों में मधुरता होती है; ब्रह्मचर्य की स्वभाविक धारणा होती है; राग-द्वेष, भय-चिन्ता, दुख-अशान्ति, ईर्ष्या-घृणा, इच्छा-आकांक्षा, अहंकार-हीनता, शुभाशुभ की आशंका जनित व्यर्थ संकल्प, व्यर्थ चिन्तन का नाम-निशान नहीं होता है; मान-अपमान, निन्दा-स्तुति, जय-पराजय, सुख-दुख, प्राप्ति-अप्राप्ति, यश-अपयश, अपने-पराये में समान दृष्टि और स्थिति होती है। पवित्र आत्मा में समय पर कृत्य का संकल्प स्वत: जाग्रत होता है, उसकी शुभ में अभिरुचि और अशुभ में अरुचि स्वत: होती है, इसलिए सदा निर्संकल्प और निर्विकल्प होती है। सर्व आत्माओं के प्रति उसकी शुभ भावना, शुभ कामना होती है, जिसके परिणाम स्वरूप सर्व आत्माओं की उसके प्रति शुभ भावना, शुभ कामना होती है।

यह सृष्टि एक अनादि-अविनाशी स्वचालित नाटक है, जिसमें सभी आत्मायें पार्टधारी हैं, इसमें न कोई अपना है और न कोई पराया है; न कोई अपना मित्र है और न कोई अपना शत्रु है; पार्ट अनुसार जो आज अपना है, वह कल पराया होगा और पराया अपना होगा; न कोई हमको कुछ दे सकता है और न हमारा कोई कुछ ले सकता है; न किसी ने हमको कुछ दिया है और न ही हमारा किसी ने कुछ लिया है; हर आत्मा अपना अनादि-अविनाशी पार्ट बजा रही है और अपने कर्मों अनुसार सुख या दुख को पा रही है। इसलिए किससे राग-द्वेष, भय-चिन्ता का कोई प्रश्न ही नहीं। इस विश्व-नाटक में जो कुछ मिला है, वह केवल पार्ट बजाने के लिए मिला है, उसको अपना समझ लेना एक भ्रान्ति है, जिसका आत्मा को पश्चाताप करना ही होता है।

दाता एक परमात्मा है, उसने हमको जो दिया है, वही हमारे लिए हितकर है। भगवानोवाच्य - बच्चे, तुम परमधाम के रहने वाले हो, इस सृष्टि पर पार्ट बजाने आये हो, अभी तुमको वापस घर चलना है। इस सत्यता को समझकर देह और देह की दुनिया से न्यारे होकर अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर परम-शान्ति, परम-शक्ति का अनुभव करो; बाप के साथ विश्व-कल्याण की सेवा कर परमानन्द का अनुभव करो और विश्व-नाटक की यथार्थता को जान साक्षी होकर इसे देखो और ट्रस्टी होकर पार्ट बजाते हुए संगमयुगी ईश्वरीय प्राप्तियों और अनुभूतियों में रमण करते हुए परम सुख का अनुभव करो। यही सुख-शान्तिमय जीवन का सुगम पथ है। इस विश्व में हर आत्मा देह सहित सर्व साधनो ट्रस्टी मात्र ही है।

जब इस सत्य पर दृढ़ निश्चय होगा और सतत् अभ्यास द्वारा सहज स्थिति होगी तब ही हम अपनी अन्तिम मन्जिल सुखमय जीवन और सुखद मृत्यु को सहज प्राप्त कर सकेंगे अर्थात् राग-द्वेष, भय-चिन्ता, दुख-अशान्ति से मुक्त होंगे। यही जीवन की परम-प्राप्ति, परमात्मा का परम-वरदान है, इस ब्राह्मण जीवन का परम-पुरुषार्थ और इस जीवन का परम-कर्तव्य है।

''जैसे कर्मों की गति गहन गाई है, वैसे पवित्रता की परिभाषा भी अति गुह्य है। पवित्रता माया के अनेक विघ्नों से बचने की छत्रछाया है। पवित्रता को ही सुख-शान्ति की जननी कहा जाता है। ... किसी भी कारण से दुख का ज़रा भी अनुभव होता है तो सम्पूर्ण पवित्रता की कमी है।''

अ.बापदादा 14.11.87

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें:-

स्पार्क – आध्यात्मिक अनुप्रयोग अनुसन्धान केन्द्र
(SpARC – Spiritual Applications Research Centre),
बेहतर विश्व निर्माण अकादमी,
ज्ञान सरोवर, आबू पर्वत - 307501
राजस्थान, भारत
मोबाईल: 9414 15 1879, 9414 00 3497,
9414 08 2607
फैक्स – 02974-238951
ई-मेल – bksparc@gmail.com,
sparc@bkivv.org